गुरु नानक देव जयंती

प्रिलिम्स के लिये:

गुरु नानक देव, सिख धर्म,

मेन्स के लिये:

गुरु नानक देव, महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वों की शिक्षाएँ

चर्चा में क्यों?

8 नवंबर, 2022 को गुरु नानक देव की 553वीं जयंती मनाई गई।

//

गुरु नानक देव

- **जन्म:**
  - उनका जन्म वर्ष **1469 में** लाहौर के पास **तलवंडी राय भोई (Talwandi Rai Bhoe)** गाँव में हुआ था जिसे बाद में **ननकाना साहिब** नाम दिया गया।
  - वह सिख धर्म के 10 गुरुओं में से पहले और सिख धर्म के संस्थापक थे।
- **योगदान:**
  - उन्होंने 16वीं शताब्दी में **अंतर-धार्मिक संवाद शुरू किया और अपने समय के अधिकांश धार्मिक संप्रदायों के साथ बातचीत की।**
  - सिखों के पाँचवें गुरु, **गुरु अर्जुन (वर्ष 1563-1606) द्वारा संकलित आदिग्रंथ में शामिल रचनाएँ** लिखीं गईं।
    - 10वें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह (वर्ष 1666-1708) द्वारा किये गए परिवर्द्धन के बाद इसे गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में जाना जाने लगा।
  - उन्होंने भक्ति के **'निर्गुण'** (निराकार परमात्मा की भक्ति और पूजा) की वकालत की।
  - त्याग, अनुष्ठान स्नान, छवि पूजा, तपस्या को अस्वीकार कर दिया।
  - सामूहिक जप से जुड़े सामूहिक पूजा (संगत) के लिये नियम निर्धारित किये।
  - अपने अनुयायियों को **'एक ओंकार'** का मूल मंत्र दिया और **जाति, पंथ एवं लिंग के आधार पर भेदभाव किये बिना** सभी मनुष्यों के साथ समान व्यवहार करने पर ज़ोर दिया।

- **मृत्यु:**
    - उनकी मृत्यु वर्ष 1539 में करतारपुर, पंजाब में हुई।

आधुनिक भारत में गुरु नानक देव की प्रासंगिकता:

- **एक समतावादी समाज का निर्माण:** समानता का उनका विचार निम्नलिखित नवीन सामाजिक संस्थानों के रूप में देखा जा सकता है, जो कि उनके द्वारा शुरू किये गए थे।
    - **लंगर**: सामूहिक खाना बनाना और भोजन को वितरित करना।
    - **पंगत:** उच्च एवं निम्न जाति के भेद के बिना भोजन करना।
    - **संगत:** सामूहिक निर्णय लेना।
- **सामाजिक सद्भाव:**
    - उनके अनुसार, पूरी दुनिया ईश्वर की रचना है और सभी एक समान हैं, केवल एक सार्वभौमिक रचनाकार है अर्थात् **"एक ओंकार सतनाम" (Ek Onkar Satnam)**।
    - इसके अलावा क्षमा, धैर्य, संयम और दया उनके उपदेशों के मूल केंद्र में हैं।
- **न्यायपूर्ण समाज का निर्माण:**
    - उन्होंने अपने शिष्यों के सम्मुख '**कीरत करो, नाम जपो और वंड छको**' (काम, पूजा और दान) का आदर्श रखा।
    - उनके धर्म का आधार कर्म के सिद्धांत पर आधारित था और उन्होंने अध्यात्मवाद के विचार को सामाजिक ज़िम्मेदारी एवं सामाजिक परिवर्तन की विचारधारा में परिणत कर दिया।
    - **उन्होंने 'दशवंध' (Dasvandh) की अवधारणा या अपनी कमाई का दसवाँ हिस्सा ज़रूरतमंद व्यक्तियों को दान करने की वकालत की।**
- **लैंगिक समानता:**
    - उनके अनुसार, '**महिलाओं के साथ-साथ पुरुष भी ईश्वर की कृपा को साझा करते हैं और अपने कार्यों के लिये समान रूप से ज़िम्मेदार होते हैं।**
    - महिलाओं के लिये सम्मान और लैंगिक समानता शायद उनके जीवन से सीखने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण सबक है।
- **शांति स्थापना:**
    - भारतीय दर्शन के अनुसार, **गुरु वह है जो रोशनी (अर्थात् ज्ञान) प्रदान करता है, संदेह को दूर करता है और सही रास्ता दिखाता है।**
    - इस संदर्भ में **गुरु नानक देव के विचार दुनिया भर में शांति, समानता और समृद्धि को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं।**

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/guru-nanak-dev-jayanti